गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 172
दि. 21.10.2025,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

दीयों की रौनक और प्रदूषण का संगम: पूरे भारत में धूमधाम से मनाई गई दिवाली, दिल्ली-एनसीआर में गंभीर वायु गुणवत्ता के बीच त्योहार की खुशियां

नई दिल्ली। दीपावली का पावन पर्व देशभर में धूमधाम से मनाया गया, घर-गृहस्थियों में मिट्टी के दीयों की जगमगाहट और बाजारों में रंग-बिरंगी लाइटों ने पूरे वातावरण को उत्सव का रूप दे दिया। मंदिरों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ ने धार्मिक स्थलों को भव्य रूप से सजाया, वहीं जनता ने अपने-अपने घरों में दीप जलाकर सुख-समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा की कामना की। हालांकि, राजधानी दिल्ली और उसके आस-पास के इलाकों में इस बार दिवाली के जश्न के साथ-साथ प्रदूषण ने लोगों की चिंता बढ़ा दी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस साल दिल्ली-एनसीआर में प्रमाणित हरे पटाखों के नियंत्रित उपयोग की अनुमति मिलने के बाद राजधानी में सीमित समय में पटाखे फोड़े गए। बावजूद इसके रातभर पटाखों और धुएं की वजह से वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' से सीधे 'गंभीर' श्रेणी तक पहुंच गई। राजधानी के आनंद विहार और वज़ीरपुर जैसे इलाकों में सुबह के समय AQI 400 के पार दर्ज किया गया। कुल 38 मॉनिटरिंग स्टेशनों में से 27 'बहुत खराब' श्रेणी में थे। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार 401 से ऊपर का AQI 'गंभीर' माना जाता है। ग्रैप स्टेज-2 लागू होने के कारण डीजल जेनरेटर पर रोक, बाहरी राज्यों से केवल CNG या इलेक्ट्रिक बसों की अनुमति और पार्किंग शुल्क में बढ़ोतरी जैसी कड़ाई लागू की गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गोवा तट पर विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत पर नौसेना कर्मियों के साथ दीपावली का पर्व मनाया। उन्होंने दीपों और सूर्य की

किरणों की तुलना युद्धपोत पर प्रज्वलित दीपों से करते हुए सैनिकों के समर्पण की सराहना की। प्रधानमंत्री ने नौसेना कर्मियों को मिठाइयां बांटी और उन्हें प्रेरणादायक संबोधन दिया। इसके बाद मोदी ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की और दीपावली की शुभकामनाएं साझा कीं। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने भी राष्ट्रपति से मिलने के बाद शुभकामनाएं दीं। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने इस अवसर को एक अनोखे अंदाज में मनाया। उन्होंने पुरानी दिल्ली की प्रसिद्ध मिठाई की दुकान पर 'इमरती' और 'बेसन लड्डू' बनाने का प्रयास किया और वीडियो साझा कर लोगों को दिवाली की शुभकामनाएं दी। वहीं, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने लोगों से केवल हरे पटाखों का उपयोग करने और पारंपरिक रूप से दीयों, रंगोली और मिठाइयों के माध्यम से त्योहार मनाने की अपील की। देश के अन्य हिस्सों में भी दिवाली का उत्सव पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। गोवा में नरकासुर के प्रतीकात्मक पुतले जलाए गए, राजस्थान में बाजारों और मंदिरों में भारी भीड़ और रात के आकाश में आतिशबाजी की चमक देखी गई। वाराणसी और अयोध्या में काशी विश्वनाथ और हनुमानगढ़ी मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। हरियाणा पुलिस ने अनाथालयों, वृद्धाश्रमों और झुग्गी-झोपड़ियों में दीप जलाए और मिठाइयां बांटी। पश्चिम बंगाल में काली पूजा और मां काली के मंदिरों में भक्तों की लंबी कतारें देखी गईं। झारखंड में दीपावली को उत्साहपूर्वक मनाया गया, हालांकि प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आदेशों के तहत केवल दो घंटे के लिए पटाखों की अनुमति थी। त्रिपुरा में मां त्रिपुरा सुंदरी मंदिर में दीपावली उत्सव और मेला आयोजित किया गया। तमिलनाडु में भारी बारिश के बावजूद लोग सुबह जल्दी उठकर नए कपड़े पहनकर पटाखे फोड़ते रहे। राज्य में अब तक 89 लोग पटाखों से घायल होने की घटनाओं में शामिल हैं। इस तरह, पूरे भारत में दिवाली के अवसर पर उत्सव और रौनक का संगम देखने को मिला, वहीं प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों ने लोगों की सतर्कता बढ़ा दी। दिल्ली-एनसीआर में गंभीर वायु गुणवत्ता और पूरे देश में पर्यावरण की सुरक्षा के बीच यह त्योहार यादगार और सावधानीपूर्वक मनाया गया।

भरतकूप में दीपावली का पर्व मातम में बदल गया, किसान ने संदिग्ध परिस्थितियों में फंदा लगाकर दी जान

(जीएनएस)। भरतकूप (चित्रकूट)। दीपावली की रौनक और खुशियों के बीच भरतकूप थाना क्षेत्र के सभापुर बराछ गांव में एक दुखद और रहस्यमयी घटना ने पूरे गांव को स्तब्ध कर दिया। रविवार की रात 55 वर्षीय किसान भगवान दीन ने अपने बगईचे में बने कच्चे आवास में फंदा लगाकर अपनी जान दे दी। यह घटना न केवल उनके परिवार बल्कि पूरे गांव के लिए आश्चर्य और गहरे शोक का कारण बनी है।

जानकारी के अनुसार भगवान दीन और उनकी पत्नी भूरी कुछ समय से घर से थोड़ी दूरी पर बने बगईचे में रहते थे। माता भूरी वहां खाना बनाती थीं और पिता अकेले रहते थे। हाल ही में परिवार में खुशी का अवसर आया था, जब उनके सबसे छोटे भाई रमेश की पत्नी रोशनी ने पुत्र को जन्म दिया था। इसी खुशी के बीच रविवार की रात में भगवान दीन ने अपने बगईचे की कोठरी में अकेले रहते हुए यह आत्मघाती कदम उठाया।

सुबह लगभग पांच बजे माता भूरी जब कोठरी में पहुँचीं, तो उन्होंने पति को फंदे में लटका पाया। उन्होंने तुरंत घर में जाकर परिवार को सूचित किया। घटना की जानकारी मिलते ही भरतकूप पुलिस

मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बड़े बेटे पप्पू ने बताया कि रात को पिता ने खाना खाया और किसी भी तरह का संकेत नहीं दिया कि वह यह कदम उठाने वाले हैं।

थाना प्रभारी मनोज कुमार ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और रिपोर्ट आने के बाद ही मौत की सटीक वजह सामने आएगी। प्रारंभिक तौर पर यह मामला संदिग्ध परिस्थितियों में आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है, लेकिन पुलिस पूरी तरह से जांच कर रही है।

इस दुखद घटना ने गांव में दीपावली के पर्व की खुशियों को मातम में बदल दिया। परिवार और गांववासी गहरे सदमे में हैं और गांव में शोक की लहर दौड़ गई है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस तरह की घटनाओं से परिवार और समाज को चेतावनी मिलती है कि मानसिक स्वास्थ्य और पारिवारिक तनाव पर ध्यान देना कितना जरूरी है। विशेषज्ञों का कहना है कि ग्रामीण इलाकों में मानसिक स्वास्थ्य और अकेलेपन के कारण इस तरह की घटनाएँ बढ़ सकती हैं, इसलिए सामुदायिक जागरूकता और समय पर सहायता महत्वपूर्ण है। इस घटना ने ग्रामीणों को भी सोचने पर मजबूर कर दिया कि खुशियों के पर्व के समय भी अगर मानसिक संतुलन और सामाजिक समर्थन न हो तो जीवन में अनहोनी घटनाएँ घट सकती हैं।

पूरा गांव इस घटना से गमगीन है और दीपावली के अवसर पर यह दुखद घटना लोगों के मन में संवेदनशीलता और सहानुभूति की भावना जगाने का काम कर रही है। परिवार ने स्थानीय प्रशासन और पुलिस से अपील की है कि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए जागरूकता और सहायता की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

कर्नाटक दिवाली समारोह में भीड़ प्रबंधन की चूक, हाइपोग्लाइसीमिया और डिहाइड्रेशन से 10 घायल

(जीएनएस)। बेंगलुरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की मौजूदगी में आयोजित दिवाली समारोह में भारी भीड़ और खराब आयोजन प्रबंधन के कारण 10 लोगों की तबियत बिगड़ गई। यह कार्यक्रम दक्षिण कन्नड़ जिले के पुत्तूर तालुक स्थित स्टेडियम में आयोजित किया गया था, जो 'अशोका जनामना' नामक समारोह के तहत हुआ। स्थानीय विधायक अशोक राय भी इस दौरान कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित थे।

घटना के अनुसार, स्टेडियम की क्षमता केवल 20,000 लोगों की थी, लेकिन कार्यक्रम में अनुमानित एक लाख लोग जमा हो गए। इतनी भीड़ ने भगदड़ जैसी स्थिति पैदा कर दी, जिससे कई लोगों को सांस लेने में दिक्कत हुई और हाइपोग्लाइसीमिया तथा डिहाइड्रेशन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुईं। दोपहर के भोजन और लंबे समय तक प्रतीक्षा के कारण भीड़ में कई लोग चक्कर खाकर गिर पड़े। महिला और बच्चों की हालत सबसे गंभीर बताई गई, जिन्हें तुरंत आईवी फ्ल्यूड्स और आपातकालीन ओपीडी सुविधा के माध्यम से उपचार दिया गया। स्थानीय नागरिकों ने आयोजकों पर सुरक्षा मानकों की अनदेखी और भीड़ प्रबंधन की कमी का आरोप लगाया। उनका कहना है

कि इस तरह के बड़े आयोजनों में उचित व्यवस्थाएं न होने पर जानमाल को गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। लोगों ने सरकार और आयोजकों से यह सुनिश्चित करने की अपील की है कि भविष्य में भीड़भाड़ वाले कार्यक्रमों में ठोस सुरक्षा और इमरजेंसी व्यवस्थाएँ अपनाई जाएँ।

यह घटना कर्नाटक में पहले हुई भीड़ नियंत्रण की असफलताओं की याद ताजा करती है। 4 जून 2025 को बेंगलुरु के स्टेडियम में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (RCB) की जीत के जश्न के दौरान हुई भगदड़ में 11 लोगों की मौत और 50 से अधिक लोग घायल हुए थे। उस समय भी मुख्यमंत्री और अन्य मंत्री समारोह में उपस्थित थे, लेकिन सुरक्षा उपायों में सुधार नहीं किया गया।

पुलिस ने बताया कि स्टेडियम में भीड़ को नियंत्रित करने के लिए चेतावनी जारी की गई थी, लेकिन आयोजकों ने पर्याप्त कदम नहीं उठाए। घायल लोगों का इलाज जारी है और पुलिस मामले की जांच कर रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि बड़े आयोजनों में भीड़ प्रबंधन और आपातकालीन चिकित्सा सुविधा को प्राथमिकता देना अनिवार्य है।

इस घटना ने आयोजकों और प्रशासन को चेतावनी दी है कि किसी भी बड़े सार्वजनिक समारोह में सुरक्षा और स्वास्थ्य प्रोटोकॉल की अनदेखी भारी हादसे को न्योता दे सकती है। आने वाले त्योहारों और सार्वजनिक कार्यक्रमों के मद्देनजर प्रशासन को तत्काल प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की शांति वार्ता में शामिल होने को तैयार, लेकिन हंगरी पर जताई शंका

(जीएनएस)। बुडापेस्ट। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने सोमवार को साफ किया कि अगर उन्हें आमंत्रित किया गया तो वह हंगरी में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ होने वाली शांति वार्ता में शामिल होने के लिए तैयार हैं। यह बयान ऐसे समय में आया है जब ट्रंप और पुतिन ने हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में अगले कुछ हफ्तों में यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने के उद्देश्य से आयोजित वार्ता की योजना की घोषणा की थी।

जेलेंस्की ने संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि अगर बैठक का प्रारूप ऐसा होगा कि वह ट्रंप और पुतिन से सीधे मिल सकें या शटल डिप्लोमेसी के जरिए वार्ता हो, तो वह इसमें भाग लेने के लिए सहमत हैं। उन्होंने कहा, "किसी न किसी प्रारूप में हम सहमत होंगे।" उनका यह बयान संकेत देता है कि यूक्रेन युद्ध के समाप्ति की दिशा में अभी भी प्रत्यक्ष या मध्यस्थ वार्ता की संभावनाएँ मौजूद हैं। हालांकि, जेलेंस्की ने हंगरी को वार्ता स्थल के रूप में चुनने पर अपनी शंका भी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ओरबान का रवैया यूक्रेन के लिए सकारात्मक नहीं है और उनकी भूमिका संतुलित नहीं मानी जा सकती। इससे यह स्पष्ट होता है कि वार्ता स्थल और उसकी भूमिका को लेकर राजनीतिक स्तर पर अभी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इस वार्ता के संभावित आयोजन के दौरान ट्रंप ने कहा है कि उनका लक्ष्य रूस

और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध को समाप्त करना है। उन्होंने पहले भी कई बार दोनों पक्षों के बीच सीधे बातचीत कराने का प्रयास किया, लेकिन अब तक कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आया। ट्रंप और पुतिन के बीच इस बैठक में जेलेंस्की की भागीदारी से युद्ध समाप्ति की दिशा में नई उम्मीदें पैदा हो सकती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि इस वार्ता का स्वरूप, स्थल और सभी पक्षों की भागीदारी निर्णायक साबित होगी। अगर जेलेंस्की सीधे बैठक में शामिल होते हैं और वार्ता का निष्पक्ष मंच उपलब्ध होता है, तो रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष के समाधान की राह खुल सकती है। वहीं, हंगरी की भूमिका और प्रधानमंत्री ओरबान के रुख ने इस वार्ता को लेकर कई राजनीतिक सवाल भी खड़े कर दिए हैं। अन्य राजनीतिक और सैन्य विश्लेषक मानते हैं कि युद्ध की जटिलताओं को देखते हुए यह बैठक केवल प्रारंभिक कदम हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप यदि गंभीर निर्णय लिए जाते हैं, तो यह यूरोप में शांति प्रक्रिया को नई दिशा दे सकता है। यूक्रेन युद्ध की वजह से वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति, आर्थिक अस्थिरता और सुरक्षा पर असर पड़ा है, इसलिए इस वार्ता के परिणाम का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रभाव देखने को मिल सकता है। जेलेंस्की की यह पहल और ट्रंप-पुतिन वार्ता की योजना युद्ध समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण मोड़ साबित हो सकती है, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि इसके लिए सभी पक्षों की पारदर्शिता, संतुलित दृष्टिकोण और राजनीतिक इच्छाशक्ति जरूरी होगी। यदि बैठक सफल रहती है, तो यह न केवल यूक्रेन और रूस के लिए बल्कि पूरे क्षेत्र और वैश्विक शांति के लिए एक अहम संकेत होगा।

झामुमो ने लिया बड़ा फैसला, बिहार चुनाव में नहीं उतारेगी उम्मीदवार

(जीएनएस)। पटना। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर अचानक बदलते रुख के चलते राजनीतिक गलियारे में हलचल मचा दी है। दो दिनों तक जारी असमंजस के बाद रविवार को पार्टी ने स्पष्ट कर दिया कि इस बार बिहार में कोई उम्मीदवार नहीं उतारा जाएगा। यह फैसला झामुमो के केंद्रीय महासचिव विनोद कुमार पांडेय ने प्रेस बयान के माध्यम से साझा किया।

पांडेय ने कहा कि पार्टी को महागठबंधन के प्रमुख घटक दलों ने अंतिम क्षण तक गुमराह किया और निर्णय प्रक्रिया में अंधेरे में रखा। इस स्थिति को देखते हुए झामुमो अब बिहार चुनाव में भाग नहीं लेगी। उन्होंने यह भी बताया कि झारखंड में महागठबंधन की स्थिति की समीक्षा की जाएगी और इस पर निर्णय जेएमएम अध्यक्ष व झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन द्वारा लिया जाएगा।

यह बदलाव राजनीतिक रूप से चौंकाने वाला है क्योंकि सिर्फ दो दिन पहले, यानी 18 अक्टूबर को, जेएमएम ने रांची में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर छह सीटों—जमुई, चकाई, धमदाहा, मनिहारी, पीरपैंती और कटोरिया—पर अकेले चुनाव लड़ने का ऐलान किया था। उस समय पार्टी के केंद्रीय महासचिव और प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा था कि बिहार में महागठबंधन ने जेएमएम को सम्मान नहीं दिया, इसलिए अब पार्टी स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ रही है। वास्तविकता यह है कि इस अचानक बदलाव ने बिहार में महागठबंधन की रणनीति और उम्मीदवार चयन प्रक्रिया पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि जेएमएम के निर्णय से महागठबंधन की चुनावी योजनाओं में फेरबदल करना पड़ सकता है, और इससे कुछ क्षेत्रों में वोट बंटवारे की संभावना प्रभावित हो सकती है।

संपादकीय

मंदिरों की संपत्ति

सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर के खजाने की खोजबीन पूरी हो गई। दो दिन तक चले इस अभियान में इस मंदिर के खजाने से कुछ विशेष नहीं मिला। जहां पहले दिन कुछ बर्तन और खाली संदूक मिले, वहीं दूसरे दिन सोने की एक और चांदी की तीन छड़ें मिलीं। आम धारणा यह थी कि खजाने में बहुत सारी संपत्ति मिलेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। संभवतः इसका कारण यह रहा कि 54 वर्ष पहले जब इस खजाने को खोला गया था तो उसकी संपत्ति एक बैंक में जमा कर दी गई थी।

इसके बाद भी प्रश्न यह है कि क्या इतने वर्षों में खजाने में कोई सामग्री नहीं रखी गई? वस्तुस्थिति जो भी हो, इस मंदिर के खजाने को खोलने के निर्णय का विरोध भी किया गया। चूंकि खजाना खोलने का आदेश सुप्रीम कोर्ट ने दिया था, इसलिए विरोध का कोई औचित्य नहीं बनता। प्रश्न यह नहीं है कि इस मंदिर के खजाने से अपेक्षित संपदा क्यों नहीं मिली, बल्कि यह है कि मंदिरों की संपत्ति और विशेष रूप से चढ़ावे में मिली सामग्री के रखरखाव की प्रक्रिया पारदर्शी क्यों नहीं है? यह सही समय है कि सभी मंदिरों को मिलने वाले चढ़ावे की सामग्री का रखरखाव पारदर्शी तरीके से किया जाए। इसका कोई औचित्य नहीं कि मंदिर के खजाने दशकों बाद खोले जाएं।

एक ओर जहां यह आवश्यक है कि मंदिरों के चढ़ावे में मिले धन एवं अन्य सामग्री का रखरखाव पारदर्शी तरीके से किया जाए, वहीं दूसरी ओर इसकी भी आवश्यकता है कि उसका उपयोग धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यों में ही किया जाना सुनिश्चित किया जाए। यही बात मंदिरों की अन्य संपत्ति पर भी लागू होती है। इसे पिछले दिनों हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट के उस आदेश ने रेखांकित भी किया, जिसमें कहा गया है कि मंदिरों को दान की गई धनराशि का समुचित उपयोग किए जाने की पारदर्शी व्यवस्था बने।

हिमाचल हाई कोर्ट ने मंदिरों की आय को देवी-देवताओं की संपत्ति बताया और यह स्पष्ट किया कि चढ़ावे में मिले धन का उपयोग सामाजिक, शैक्षणिक, धर्मार्थ कार्यों में खर्च किया जाए। उसने अपने आदेश में यह भी साफ किया कि मंदिर के ट्रस्टी केवल उसके संरक्षक हैं और उसकी संपत्ति पर सरकार का कोई अधिकार नहीं बनता।

हाई कोर्ट ने मंदिरों की आय और व्यय का विवरण सार्वजनिक तौर पर जारी रखने के निर्देश देते हुए यह भी कहा कि सरकारों को मंदिरों की आय को अपनी योजनाओं पर खर्च करने का अधिकार नहीं, लेकिन यह देखने में आ रहा है कि कई राज्यों में मंदिरों का संचालन ऐसे ट्रस्टों की ओर से किया जा रहा है, जिनमें सरकार का दखल होता है। आखिर जब अन्य समुदायों के धार्मिक स्थलों का संचालन उस समुदाय विशेष के लोग करते हैं तो मंदिरों के मामले में ऐसा क्यों नहीं है?

औद्योगीकरण की राह पर उत्तर प्रदेश, अब बीमारू राज्य नहीं रहा

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ब्रह्मोस मिसाइल की पहली खेप सेना को सौंपी। प्रधानमंत्री मोदी ने यूपी सरकार की सराहना की। 'एक जनपद-एक उत्पाद' योजना सफल रही, जिससे निर्यात बढ़ा। उत्तर प्रदेश का निर्यात 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। सरकार 2030 तक अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य बना रही है। युवा उद्यमियों के लिए ऋण योजनाएं शुरू की गई हैं। निवेश मित्र पोर्टल से व्यापार सुगम हुआ है।

गत दिनों रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लखनऊ यूनिट में तैयार सुपरसोनिक मिसाइल ब्रह्मोस की पहली खेप सेना को सौंपा। यह योगी सरकार की सफलता का प्रमाण है कि कभी दिल्ली के विश्व व्यापार मेले में एक स्टाल लगाने वाला उत्तर प्रदेश आज अपना अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला आयोजित कर रहा है।

हाल में ग्रेटर नोएडा स्थित इंडिया एक्सपो सेंटर में यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि योगी सरकार ने यूपी को वैश्विक मंच पर ला खड़ा किया है। रक्षा से लेकर सेमीकंडक्टर, मोबाइल से लेकर लाजिस्टिक तक हर क्षेत्र में मेक इन इंडिया की ताकत को ट्रेश शो में देखा गया। इस मेले की सबसे बड़ी उपलब्धि एक जनपद-एक उत्पाद योजना की सफलता रही। सबसे अधिक निर्यात आर्डर इसी योजना से जुड़े उत्पादों को मिले।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एक जनपद-एक उत्पाद योजना की सफलता पर जोर दे रहे हैं। इसके चलते उत्तर प्रदेश के निर्यात में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी हुई है और राज्य का निर्यात 88,967 करोड़ रुपये से बढ़कर दो लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। पिछले आठ वर्षों से उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे जमीनी प्रयासों का नतीजा है कि उत्तर प्रदेश अब बीमारू राज्य नहीं रहा। एक समय उत्तर प्रदेश खराब कानून व्यवस्था, कमजोर आधारभूत ढांचा, निवेशकों में निरुत्साह जैसी समस्याओं से जूझ रहा था, लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है। योगी सरकार ने हर क्षेत्र में सुधार किया। सबसे ज्यादा सफलता कानून-व्यवस्था के मोर्चे पर मिली।

योगी सरकार विकसित उत्तर प्रदेश-समर्थ उत्तर प्रदेश विजन पर काम कर रही है। इसके तहत प्रदेश की अर्थव्यवस्था को 2030 तक एक ट्रिलियन डालर और 2047

तक छह ट्रिलियन डालर तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए प्रदेश के सभी 75 जिलों को जिला निर्यात हब के रूप में विकसित किया जाएगा। इनके लिए प्रत्येक जिले में 100 एकड़ जमीन चिह्नित की जा रही है। इसका उद्देश्य सिर्फ उद्योगों को जमीन उपलब्ध कराना ही नहीं, बल्कि उन्हें एक ऐसा माहौल देना है जहां कारोबार से जुड़ी हर समस्या का समाधान एक ही जगह हो सके। इससे जिन जिलों में अभी तक छोटे पैमाने पर उद्योग चल रहे थे वहां अब बड़े स्तर पर औद्योगिक इकाइयां स्थापित होंगी। इस लक्ष्य के लिए सरकार 12 नए क्षेत्रों पर फोकस कर रही है जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव प्रौद्योगिकी, हरित ऊर्जा और कृषि तकनीक।

प्रदेश सरकार 2027 तक 1,50,000 एकड़ लैंड बैंक स्थापित करने लक्ष्य रखा है। फिलहाल सरकार के पास 54,000 एकड़ जमीन है और 75 जिलों में 96,000 एकड़ जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया जारी है। ये लैंड बैंक उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, यमुना एक्सप्रेस वे और गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरणों द्वारा बनाया जाएगा। बुंदेलखंड जैसे शुष्क क्षेत्र में औद्योगिक विकास के लिए नोएडा की भांति बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण (बीडा) की स्थापना की गई है। बीडा ने पहले चरण में 35,000 एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया है।

युवा उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए मुख्यमंत्री युवा उद्यम योजना शुरू की गई है। इसके तहत युवा उद्यमियों को ऋण शून्य ब्याज दर पर उपलब्ध कराया जाएगा। देश के कुल मोबाइल उत्पादन का 55 प्रतिशत उत्तर प्रदेश में हो रहा है। योगी सरकार के कुशल आर्थिक प्रबंधन का ही परिणाम है कि देश के रेवेन्यू सरप्लस वाले 16 राज्यों में उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है।

राज्य सरकार ने निवेश को सुगम बनाने के लिए निवेश मित्र नामक सिंगल विंडो सिस्टम लागू किया है, जो 45 विभागों की 525 से अधिक सेवाओं को एकीकृत करता है। इस पोर्टल के जरिए अनुमोदन, लाइसेंस और एनओसी के लिए आवेदन और ट्रैकिंग की सुविधा मिली है। ईज आफ डूइंग बिजनेस को मजबूत करने के लिए सभी आवेदन केवल निवेश मित्र पोर्टल से स्वीकार किए जा रहे हैं। देश में दो डिफेंस मैन्यूफैक्चरिंग कारिडोर बन रहे हैं जिसमें एक तमिलनाडु में और दूसरा उत्तर प्रदेश में है।

राज्य सरकार रोजगार सृजन के लिए ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स और सूचना प्रौद्योगिकी हब बनाने पर फोकस कर रही है। इसके तहत नोएडा और लखनऊ में फार्च्यून 500 कंपनियों को सुविधाएं दी जा रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि तकनीक और कोल्ड चेन परियोजनाओं से स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन हो रहा है जिससे शहरों की ओर होने वाले पलायन में कमी आई है। उत्तर प्रदेश सरकार कारोबार को और सुगम बनाने के लिए विधेयक ला रही है। इसके जरिए प्रदेश में उद्योग और व्यापार से जुड़े 13 राज्य अधिनियमों में लगभग 99 प्रतिशत आपराधिक प्रविधान खत्म कर दिए जाएंगे। इसमें औद्योगिक विकास के साथ-साथ श्रमिकों की सुरक्षा और सुविधा की गारंटी सुनिश्चित की जाएगी।

पिछले आठ वर्षों में योगी सरकार द्वारा किए जा रहे ठोस उपायों का ही नतीजा है कि 2017 में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था 12.89 लाख करोड़ रुपये की थी वह 2025 में बढ़कर 27.51 लाख करोड़ रुपये की हो गई। प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय भी लगातार बढ़ रही है। 2017 में प्रति व्यक्ति आय 45,000 थी, जो कि इस साल के अंत तक बढ़कर 1.20 लाख तक पहुंच जाएगी।

प्रेरणा

निःस्वार्थ पूजा की महागाथा

महाभारत के वनवास काल का वह समय बड़ा ही विषम था। हस्तिनापुर का वैभव, राजसत्ता, मित्र-सेनाएँ—सब कुछ जुए की एक दांव में लुट चुका था। पाँचों पांडव अपनी पतिव्रता पत्नी द्रौपदी सहित वनों में भटक रहे थे। कभी घने जंगलों की तपती धूप में, कभी बर्फीली हवाओं में, कभी वर्षा की बूंदों में भीगते हुए वे चलते रहते थे। जीवन कठिन था, परंतु उनके मन का दीपक धर्म की लौ से प्रज्वलित था।

वन के मध्य एक छोटी-सी कुटिया में युधिष्ठिर प्रतिदिन प्रातःकाल उठते, स्नान करते, सूर्य की ओर जल अर्पण करते और ध्यान-पूजन में लीन हो जाते। वे अपने मंत्रों में इतनी एकाग्रता से डूब जाते कि आस-पास की सारी दुनिया जैसे मौन हो जाती थी। उनके होंठों पर गीता की सारभूत वाणी — "कर्मण्येवाधिकारस्ते" — का भाव सदा जीवित था। भले ही वे राजसिंहासन से उतरकर वन के पथिक बन चुके थे, पर भीतर की राजमहत्ता अब भी उनके मन में चमक रही थी — वह थी आत्म-संयम की, धर्म-पालन की, और सबसे बढ़कर निःस्वार्थ पूजा की।

एक दिन द्रौपदी ने देखा कि युधिष्ठिर ध्यान में तल्लीन हैं, चेहरे पर एक अद्भुत शांति है, मानो किसी दिव्य लोक से संवाद कर रहे हों। पर जैसे ही पूजा पूर्ण हुई, द्रौपदी के मन का धैर्य टूट गया। उसकी आंखों में आंसू छलक आए। वह आगे बढ़ी और बोली —

"महाराज, आप प्रतिदिन इतनी श्रद्धा से पूजन करते हैं, भगवान के इतने निकट माने जाते हैं, तो उनसे क्यों नहीं कहते कि वे हमारे दुख दूर कर दें? हम वन में भटक रहे हैं, अपमान झेल रहे हैं, कष्ट में हैं। क्या यह उचित है कि भक्त इतने संकटों से गुजरे और भगवान मौन रहें?"

युधिष्ठिर मुस्कुराए। उनकी आंखों में करुणा थी, पर वह करुणा दुख की नहीं, समझ की थी। उन्होंने द्रौपदी की ओर देखा और शांत स्वर में बोले —

"प्रिय द्रौपदी, मैं भगवान से कुछ मांगने के लिए पूजा नहीं करता। पूजा तो मेरे मन की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। जैसे फूल अपनी सुगंध देता है, नदी अपना जल बहाती है, सूर्य अपना प्रकाश फैलाता है — वैसे ही मन जब निर्मल होता है, तो वह अपने आप भगवान की ओर झुक जाता है। पूजा मेरे लिए सौदे का विषय नहीं, यह तो मेरी आत्मा की आवश्यकता है।"

द्रौपदी ने विस्मय से पूछा — "परन्तु महाराज, यदि भगवान सर्वशक्तिमान हैं, तो क्या वे अपने भक्त के दुःख नहीं देख सकते?"

युधिष्ठिर ने शांत स्वर में उत्तर दिया — "द्रौपदी, भगवान की कृपा हमारे ऊपर सदा बरसती है, किंतु उसे अनुभव करने के लिए भीतर का मन शांत होना चाहिए। जब हम भगवान से कुछ मांगते हैं, तो हमारा मन आशा और भय से भर जाता है। पर जब हम केवल प्रेम से पूजा करते हैं, तो मन रिक्त हो जाता है, और उसी रिक्तता में ईश्वर का अनुभव होता है। मैं पूजा इसलिए नहीं करता कि भगवान हमें धन, राज्य या सुख दें। मैं पूजा इसलिए करता हूं कि मेरे भीतर की शांति बनी रहे, और वही शांति मुझे इन कठिन परिस्थितियों में भी स्थिर रखती है।"

उन्होंने आगे कहा — "यदि मैं हर बार अपने संकट के बदले में भगवान से वर मांगूं, तो वह भक्ति नहीं, व्यापार होगा। भक्ति तो तब होती है जब हम भगवान को उसी रूप में स्वीकार कर लें, जैसे वे हैं — चाहे वे हमें सुख दें या दुख। जब मैं पूजा करता हूं, तो मुझे ऐसा लगता है मानो मैं स्वयं को उस अनंत शक्ति में विलीन कर रहा हूं। उस समय मैं किसी वरदान की नहीं, बल्कि उस दिव्य उपस्थिति की खोज में होता हूं जो भीतर आनंद जगाती है।"

द्रौपदी मौन रह गई। उसने पहली बार समझा कि युधिष्ठिर का धर्म केवल शास्त्रों में नहीं, उनके जीवन में भी रचा-बसा है। वह उनके चरणों में बैठ गई और बोली — "आपका यह दृष्टिकोण ही आपके भीतर के राजत्व का कारण है, महाराज। आप सचमुच धर्मराज हैं।" युधिष्ठिर ने उसकी ओर देखा और बोले — "द्रौपदी, यदि मनुष्य अपने कर्मों को शुद्ध रखे और अपने मन को श्रद्धा से भर दे, तो भगवान स्वयं उसकी रक्षा करते हैं, परंतु यह रक्षा बाहरी रूप से नहीं, भीतर की शक्ति के रूप में होती है। जब भीतर का दीपक जलता है, तो अंधकार का क्या भय?"

उस दिन से द्रौपदी ने भी समझ लिया कि पूजा केवल संकट के निवारण का साधन नहीं, बल्कि आत्मा के जागरण का माध्यम है। उसने युधिष्ठिर की बातों को अपने हृदय में अंकित कर लिया।

कहते हैं कि जब वन के अंधकार में पांडवों के चारों ओर भय व्याप्त होता था, तब भी युधिष्ठिर का शांत चेहरा सभी को बल देता था। वह निःस्वार्थ भक्ति की ज्योति थी जो हर रात उनके जीवन को आलोकित करती रही। यह कथा केवल महाभारत की नहीं, बल्कि हर युग के मनुष्य के लिए शिक्षा है। जब हम पूजा को मांग का माध्यम बनाते हैं, तब भक्ति छोटी हो जाती है; पर जब हम उसे समर्पण बना देते हैं, तब वही भक्ति हमें दिव्यता से जोड़ देती है।

निःस्वार्थ पूजा का अर्थ है — न पाने की इच्छा, न खोने का भय। बस एक शांत मन जो परमात्मा के प्रति प्रेम से भरा हो। वही सच्ची भक्ति है, वही धर्मराज युधिष्ठिर का मार्ग है, और वही वह गूढ़ सत्य है जो जीवन के प्रत्येक तूफान में मनुष्य को स्थिर बनाए रखता है।

Border पर तनाव रखने वाला China आखिर India को क्यों लगाने लगा मस्का? चीनी मुस्कान के पीछे क्या साजिश है?

बेंगलुरु में आयोजित इंडिया-चाइना फ्रेंडशिप एसोसिएशन (ICFA) के एक कार्यक्रम में चीन के मुंबई स्थित महावाणिज्यदूत किन जिए (Qin Jie) ने कहा कि भारत और चीन मिलकर उन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं जिन्हें पश्चिमी देश नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने भारत-चीन संबंधों को "उज्ज्वल भविष्य" वाला बताते हुए कहा कि दोनों देशों के पास विशाल जनसंख्या, बड़ा बाजार और "महान बुद्धिमत्ता" है। हम आपको बता दें कि यह कार्यक्रम भारत-चीन के राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित हुआ। जिए ने बेंगलुरु की तकनीकी प्रगति, जलवायु और नगरीय विकास की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह चीनी निवेश के लिए आकर्षक केंद्र बन सकता है। उन्होंने बताया कि चीन की एक कंपनी पिछले दस वर्षों से कर्नाटक में कार्यरत है और 3,000 से अधिक लोगों को रोजगार दे रही है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में लगभग 1,000 चीनी नागरिक रह रहे हैं और यह संख्या आगे बढ़ेगी। हम आपको बता दें कि भारत ने पाँच साल बाद चीनी पर्यटकों के लिए वीज़ा जारी करना शुरू किया है और सीधी उड़ानों के पुनरारंभ से पर्यटन व व्यापार में वृद्धि की उम्मीद है। जिए ने बताया कि मुंबई स्थित दूतावास ने 2025 में अब तक 80,000 वीज़ा जारी किए हैं, जो वर्ष के अंत तक 3,00,000 तक पहुँच सकते हैं। कार्यक्रम में चीन की जापान पर 1945 की विजय पर फोटो प्रदर्शनी भी लगाई गई।

देखा जाये तो बेंगलुरु में चीन के महावाणिज्यदूत की मीठी बातों में मिठास कम और मंशा ज़्यादा थी। "भारत और चीन मिलकर पश्चिम से बेहतर काम कर सकते हैं", सुनने में आकर्षक लगता है, पर यह वाक्य कूटनीति की भाषा में एक सॉफ्ट ट्रैप है। यह वही चीन है जिसने गलवान की रात भारत के जवानों पर हमला किया था, और अब उसी के प्रतिनिधि दोस्ती की बातें कर रहे हैं। सवाल यह नहीं कि चीन क्या कह रहा है, बल्कि यह है कि क्यों कह रहा है?चीन की "मुस्कान" के पीछे की रणनीति देखें तो दरअसल वह अमेरिकी दबाव से राहत की खोज में है। आज चीन पश्चिमी गठबंधनों से घिरा हुआ है— QUAD, AUKUS, NATO और इंडो-पैसिफिक साझेदारी सब मिलकर बीजिंग को रणनीतिक घेराबंदी में रखे हुए हैं। भारत इनमें एक अहम भूमिका निभा रहा है। चीन जानता है कि अगर भारत थोड़ा भी "तटस्थ" हो जाए, तो पश्चिमी मोर्चे में दरार पड़ सकती है। इसलिए "एशियाई एकता" की बात दरअसल विभाजन की चाल है। इसके अलावा, कोविड के बाद चीन की अर्थव्यवस्था धीमी पड़ी है। विदेशी कंपनियाँ पलायन कर रही हैं, और युवाओं में बेरोजगारी रिकॉर्ड स्तर पर है। ऐसे में भारत का 1.4 अरब का बाजार बीजिंग को सोने की खान नज़र आ रहा है। बेंगलुरु की तारीफ़ दरअसल एक आर्थिक प्रस्तावना है— "हमें अपने बाजार में वापस आने दो।"

इसके अलावा, गलवान, ताइवान, दक्षिण चीन सागर और हांगकांग— इन सबने चीन की छवि को कठोर और आक्रामक बना दिया है। अब वह सॉफ्ट डिप्लोमेसी के ज़रिए अपने चेहरे पर मुस्कान चढ़ा रहा है। फोटो प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, "दोस्ती की वर्षगांठ", यह सब रिश्तों की मरम्मत नहीं, छवि की मरम्मत है।

साथ ही सीमा पर चीन की हरकतें अभी भी बंद नहीं हुई हैं। पैट्रोलिंग पॉइंट 15 और डेमचोक में गतिरोध जारी है। ऐसे में मैत्रीपूर्ण बयान केवल एक साइकोलॉजिकल ऑपरेशन हैं— ताकि भारत की जनता और मीडिया "तनाव घटने" का भ्रम पाल लें। अब सवाल उठता है कि क्या भारत को भरोसा करना चाहिए? देखा जाए तो कूटनीति का पहला नियम है— "विश्वास करो, पर जाँचो।" चीन पर भरोसा करने की भूल भारत पहले कर चुका है— 1954 में "हिंदी-चीनी भाई-भाई" का नारा और 1962 की धोखेबाज़ी इसका प्रमाण है। आज भी चीन संयुक्त राष्ट्र में आतंकवादियों के खिलाफ भारत के प्रस्तावों पर वीटो लगाता है, पाकिस्तान को समर्थन देता है और अरुणाचल प्रदेश को अपने नक्शे में "दक्षिण तिब्बत" बताता है। क्या यह मित्रता है? चीन की "दोस्ती" की परिभाषा हमेशा स्वार्थ से शुरू होकर स्वार्थ पर ही खत्म होती है। इसलिए भारत को इस बार भावनाओं से नहीं, हितों से निर्णय लेना होगा। सवाल उठता है कि भारत की रणनीति कैसी होनी चाहिए। जवाब यह है कि चीन से संवाद बना रहे, पर दूरी भी बनी रहे— यह "एंगेज विद आउट इल्यूजन" की नीति होनी चाहिए। टेक्नोलॉजी और इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों में चीनी निवेश की कड़ी जाँच आवश्यक है। सीमा सुरक्षा, खुफिया सतर्कता और आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण को प्राथमिकता दी जाए। "भरोसे" की जगह "सावधानी" को आधार बनाया जाए।

बहरहाल, चीन के महावाणिज्यदूत की बातें सुनने में सॉफ्ट लग सकती हैं, पर इतिहास बताता है कि चीन की कूटनीति कभी सॉफ्ट नहीं रही। गलवान की बर्फ़ अभी पिघली नहीं है, और बीजिंग फिर से दोस्ती का गुलदस्ता लेकर आया है। यह वही पुराना खेल है — पहले तनाव बढ़ाओ, फिर "मुस्कराहट" के साथ वार्ता का प्रस्ताव रखो, ताकि भारत असमंजस में रहे। भारत को इस बार ठंडी मुस्कान से नहीं, ठोस नीति से जवाब देना होगा। दोस्ती अच्छी है, लेकिन आँख मूँदकर चीन पर भरोसा करना घातक हो सकता है।

अभियान

भाई दूज : भाई-बहन के प्रेम और आशीर्वाद की अनंत कथा

बहनों के हृदय में भाइयों के लिए जो स्नेह होता है, वह किसी ग्रंथ या मंत्र से नहीं, बल्कि प्रकृति के स्वयं के हृदय से उपजा है। भाई दूज का पर्व इसी अनंत स्नेह का प्रतीक है। यह दीपावली के दो दिन बाद, कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों का तिलक करती हैं, उनकी दीर्घायु की कामना करती हैं, और बदले में भाई उन्हें उपहार देकर स्नेह और रक्षा का वचन देते हैं। लेकिन इसके पीछे एक अत्यंत पवित्र कथा जुड़ी है, जो युगों पुरानी है।

बहुत समय पहले सूर्यदेव और छाया के दो संतानें थीं — यमराज और यमुना। यमराज मृत्यु के देवता थे, जिन्हें प्राण लेने का दायित्व मिला था, जबकि यमुना एक पवित्र नदी के रूप में जगत का कल्याण कर रही थीं। दोनों भाई-बहन एक-दूसरे से अत्यंत प्रेम करते थे, परंतु कर्तव्यों के कारण दोनों लंबे समय तक एक-दूसरे से मिल नहीं पाते थे।

एक दिन यमुना का मन अपने भाई से मिलने को व्याकुल हो उठा। उसने यमराज को सन्देश भेजा— "भैया, बहुत दिन हो गए, अब एक बार मेरे घर आओ। मैं अपने हाथों से तुम्हारा स्वागत करना चाहती हूँ, तुम्हारे माथे पर तिलक लगाकर तुम्हारे कल्याण की प्रार्थना करना चाहती हूँ।"

यमराज ने उत्तर दिया— "बहन, मैं तो मृत्यु का अधिपति हूँ। मेरे आने से किसी को भय होता है, कहीं तुम्हें कष्ट न हो जाए।"

यमुना ने कहा— "भैया, मेरे द्वार पर आकर किसी को कष्ट नहीं होगा। मेरा घर पवित्र है, मेरे द्वार पर मृत्यु नहीं, केवल प्रेम का आशीर्वाद मिलेगा।"

यमराज अपनी बहन की सच्ची भावनाओं से प्रभावित हुए और पहली बार मृत्युलोक से अपने वाहन भैंसे पर बैठकर यमुना के घर पहुँचे। यमुना ने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया, द्वार पर दीप जलाए, आरती उतारी, चन्दन का तिलक लगाया और अपने हाथों से भोजन परोसा। उन्होंने भैया के लिए स्वादिष्ट व्यंजन बनाए — खीर, पूरी, मिठाई और फल। यमराज ने बहन के स्नेह को हृदय से स्वीकार किया और बहुत प्रसन्न हुए।

भोजन के बाद यमराज ने कहा— "बहन, आज तुमने जो प्रेम दिया है, वह अमूल्य है। मैं तुम्हें वरदान देना चाहता हूँ। जो भी भाई इस दिन अपनी बहन के घर आएगा, बहन के हाथों तिलक ग्रहण करेगा, उसके घर में मृत्यु का भय नहीं रहेगा, वह दीर्घायु और सुखी जीवन पाएगा।"

उस दिन से यह परंपरा आरंभ हुई कि कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन बहन अपने भाई को घर बुलाती है, तिलक करती है, दीप जलाती है और उसके कल्याण की प्रार्थना करती है। भाई भी अपनी बहन को उपहार देकर स्नेह और सुरक्षा का वचन देता है।

कहते हैं उस दिन यमुना ने अपने भाई के स्वागत में अपने जल में स्वर्ण कमल खिलाए थे। उस पवित्र जल में स्नान करने वाले भक्तों को आज भी पुण्य मिलता है। इसलिए इस दिन यमुना स्नान का विशेष महत्व बताया गया है।

भाई दूज केवल एक पारिवारिक उत्सव नहीं, बल्कि भ्रातृ-भाव और ममता का दिव्य संगम है। यह बताता है कि संसार में मृत्यु और जीवन, भय और प्रेम — दोनों साथ चलते हैं, परंतु प्रेम जब निःस्वार्थ होता है, तो मृत्यु भी उस द्वार से दूर रहती है।

एक अन्य कथा भी कही जाती है कि जब श्रीकृष्ण नरकासुर का वध करके लौटे, तब अपनी बहन सुभद्रा के घर पहुँचे। सुभद्रा ने भी आरती उतारी, तिलक किया और दीप जलाए। श्रीकृष्ण ने उस दिन कहा— "आज से यह तिथि भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक बनेगी।" तब से यह परंपरा चलती आ रही है।

भाई दूज का यह दिन हमें याद दिलाता है कि जीवन में सबसे बड़ा उपहार धन या वस्त्र नहीं, बल्कि प्रेम और आशीर्वाद है। जब बहन तिलक लगाते हुए मन ही मन कहती है— "भैया तुम सदा स्वस्थ रहो, दीर्घायु रहो, जीवन में प्रकाश बना रहे", तो वह शब्द नहीं, एक शक्ति बन जाते हैं।

रात को जब दीपक की लौ धीरे-धीरे झिलमिलाती है, तो ऐसा लगता है जैसे यमुना की आत्मा आज भी अपने भाई यमराज के लिए दीप जला रही हो, और संसार के हर भाई के लिए यह संदेश दे रही हो —

"भाई दूज केवल तिलक नहीं, यह आत्माओं का मिलन है; यह स्मरण है कि प्रेम सबसे बड़ी सुरक्षा है।"

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

काशी में दीपावली के मौके पर मुस्लिम महिलाओं ने भगवान श्रीराम की आरती उतारकर साझा संस्कृति और सौहार्द का अद्भुत संदेश दिया

(जीएनएस)। वाराणसी। दीपावली के पावन पर्व पर काशी में एक अनोखी और प्रेरक घटना देखने को मिली, जब मुस्लिम महिलाओं ने भगवान श्रीराम की आरती उतारकर पूरे देश में सांप्रदायिक सौहार्द और एकता का संदेश दिया। लमही स्थित सुभाष भवन में आयोजित इस कार्यक्रम का आयोजन मुस्लिम महिला फाउंडेशन और विशाल भारत संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। यह आयोजन पिछले 19 वर्षों से लगातार हो रहा है और इस बार भी इसे बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ संपन्न किया गया।

कार्यक्रम में मुस्लिम महिलाओं ने जगद्गुरु बालक देवाचार्य जी महाराज के मार्गदर्शन में दीप जलाकर श्रीराम की आरती की। आरती के दौरान उर्दू में लिखी गई नाजनीन अंसारी की श्रीराम आरती को सभी उपस्थित लोगों ने मिलकर गाया। पूरे सभागार में शंखनाद और 'जय श्रीराम' के उद्घोष से वातावरण भक्तिमय और जोशीला हो गया।

जगद्गुरु बालक देवाचार्य जी ने इस अवसर पर कहा कि राम

की संस्कृति सभी को साथ लेकर चलने की शिक्षा देती है। उन्होंने मुस्लिम महिलाओं की पहल को रामराज्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए कहा कि अगर देश और परिवार में शांति चाहिए तो राम नाम ही सबसे बड़ा सहारा है।

मुस्लिम महिला फाउंडेशन की नेशनल सदर नाजनीन अंसारी ने अपने भाषण में कहा कि "हमने मजहब बदला है, धर्म नहीं। धर्म तो सनातन है। हम सब सनातनी हिंदू हैं। राम के आने का मतलब है सुख, शांति, प्रेम और एकता।" उन्होंने अफगानिस्तान में भगवान राम की प्रतिमा स्थापित करने की भी मांग की, ताकि वहां के लोग अपनी जड़ों और संस्कृति से जुड़ सकें।

विशाल भारत संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजीव श्री गुरुजी ने कहा कि 'रामपंथ ही दुनिया में फैली नफरत को समाप्त करने का एकमात्र उपाय है।' वहीं संस्था की केंद्रीय परिषद सदस्य डॉ. नजमा परवीन ने कहा, "हम अपने पूर्वजों को भूलकर अरबी या तुर्की नहीं बन सकते, हमारी जड़ें सनातन में हैं।"

इस आयोजन ने न केवल आस्था का प्रतीक प्रस्तुत किया, बल्कि सांप्रदायिक एकता और भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण का भी प्रेरक उदाहरण पेश किया। कार्यक्रम में शामिल सभी लोगों ने साझा संस्कृति, भाईचारे और धार्मिक सहिष्णुता के महत्व पर जोर दिया। काशी के इस अद्भुत आयोजन ने यह संदेश दिया कि पर्व और धार्मिक आस्था केवल भक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में प्रेम, सौहार्द और एकता का पुल भी बन सकते हैं।

डकैती के मामले में बर्खास्त सब-इंस्पेक्टर रंजीत कासले गिरफ्तार, गुजरात पुलिस ने लातूर से दबोचा

(जीएनएस)। मुंबई। महाराष्ट्र पुलिस से बर्खास्त सब-इंस्पेक्टर रंजीत कासले एक बार फिर विवादों में आ गया है। गुजरात पुलिस ने सूरत में दर्ज एक डकैती के मामले में कासले को महाराष्ट्र के लातूर जिले से गिरफ्तार किया है। अधिकारियों के अनुसार, रविवार देर रात करीब 10:30 बजे गुजरात पुलिस की एक विशेष टीम ने स्थानीय पुलिस की मदद से यह कार्रवाई की। यह गिरफ्तारी ऐसे समय में हुई है जब कासले पहले ही कई विवादित मामलों में घिरा हुआ था, जिनमें बीड सरपंच हत्याकांड से जुड़े कथित "सुपारी कनेक्शन" का दावा भी शामिल है।

मिली जानकारी के अनुसार, सूरत के पास पाल पुलिस स्टेशन में दर्ज डकैती के एक मामले में कासले का नाम सामने आया था। इस केस में पहले से गिरफ्तार कुछ संदिग्धों ने पूछताछ के दौरान खुलासा किया था कि कासले ने लुटेरों के गिरोह को रसद और अन्य सहायता उपलब्ध कराई थी। इन बयानों के आधार पर गुजरात

पुलिस ने उसकी तलाश शुरू की और पिछले कई दिनों से लातूर में निगरानी रखी जा रही थी। रविवार रात जब कासले की मौजूदगी की पुष्टि हुई, तो टीम ने तत्काल दबिश डालकर उसे गिरफ्तार कर लिया। लातूर अपराध शाखा के निरीक्षक सुधाकर बावकर ने बताया कि गुजरात पुलिस ने स्थानीय पुलिस से समन्वय कर यह कार्रवाई की। कासले को सोमवार को सूरत ले जाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है, जहाँ उससे विस्तृत पूछताछ की जाएगी। गौरतलब है कि रंजीत कासले को इस साल की शुरुआत में महाराष्ट्र पुलिस से बर्खास्त कर दिया गया था। बर्खास्तगी से पहले वह कई विवादों में फँसा हुआ था। अप्रैल में बीड पुलिस ने उसे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया था, जब उसने कथित रूप से सोशल मीडिया पर एक आपत्तिजनक टिप्पणी पोस्ट की थी।

रंजीत कासले ने इससे पहले एक सनसनीखेज दावा भी किया था कि उसे पिछले साल दिसंबर में मस्साजोग गांव के सरपंच संतोष देशमुख की हत्या के मुख्य संदिग्ध वाल्मीक कराड की हत्या की "सुपारी" दी गई थी। उसने आरोप लगाया था कि उसे इस काम के बदले मोटी रकम की पेशकश की गई थी। हालांकि, इस दावे की कोई ठोस पुष्टि नहीं हो सकी थी।

अब सूरत डकैती मामले में गिरफ्तारी के बाद रंजीत कासले एक बार फिर कानूनी जाल में फँस गया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, उससे यह जानने की कोशिश की जा रही है कि उसका अपराधियों से क्या सीधा संबंध था और क्या वह डकैती की योजना में किसी रूप में शामिल था या केवल रसद सहायता तक ही उसकी भूमिका सीमित थी।

इस गिरफ्तारी के बाद पुलिस महकमे में हलचल तेज हो गई है। रंजीत कासले जैसे बर्खास्त पुलिसकर्मी का आपराधिक गिरोहों से जुड़ाव पूरे विभाग की छवि पर भी सवाल खड़े कर रहा है। अधिकारी मानते हैं कि यह मामला पुलिस की नैतिक जवाबदेही और अनुशासन पर गहरी चोट करता है, क्योंकि एक समय वर्दी में रहने वाला व्यक्ति अब उसी तंत्र के खिलाफ अपराधों में शामिल पाया जा रहा है।

गुजरात पुलिस अब रंजीत कासले से पूछताछ कर सूरत डकैती कांड के और भी पहलुओं का खुलासा करने की उम्मीद कर रही है। आने वाले दिनों में यह स्पष्ट हो सकेगा कि वह केवल अपराधियों को सहयोग दे रहा था या उनके साथ सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ था।

मशहूर हास्य कलाकार असरानी का निधन, बॉलीवुड की कॉमेडी दुनिया में भारी क्षति

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय सिनेमा के हास्य जगत के प्रसिद्ध अभिनेता और कॉमेडियन असरानी का 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया। सोमवार शाम लगभग 4 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। लंबे समय से उम्र जनित बीमारियों से जूझ रहे असरानी ने अपने करियर में भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में हास्य और मनोरंजन का अनोखा योगदान दिया। उनका निधन न केवल उनके परिवार और मित्रों के लिए बल्कि पूरे बॉलीवुड के लिए एक बड़ी क्षति है।

असरानी ने 1970 के दशक में फिल्मों में कॉमेडियन के रूप में कदम रखा और जल्दी ही दर्शकों के बीच अपनी अलग पहचान बना ली। उनकी कॉमेडी की खासियत उनके सहज हाव-भाव, चेहरे के भाव और संवाद अदायगी में छिपी हुई हास्य प्रतिभा थी। दर्शक उनकी फिल्मों में उनका अंदाज देखकर हंसी रोक नहीं पाते थे। उनकी यादगार फिल्मों में 'शोले', 'चुपके-चुपके', 'छोटी सी बात', 'रफूचक्कर', 'फकीरा', 'हीरा लाल पन्नालाल', 'पति पत्नी', 'हेराफेरी', 'हलचल', 'दीवाने हुए पागल', 'गरम मसाला', 'भागमभाग' और 'मालामाल वीकली' जैसी कई फिल्में शामिल हैं। इन फिल्मों ने उन्हें भारतीय कॉमेडी सिनेमा में स्थायी स्थान दिलाया।

असरानी की कॉमेडी का असर केवल बड़े पर्दे तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने थिएटर और छोटे पर्दे पर भी अपनी कला का लोहा मनवाया। उनके अभिनय में जो सहजता और प्राकृतिक हास्य था, उसने फिल्म इंडस्ट्री में हास्य की नई परिभाषा दी। उनके बिना बॉलीवुड की हास्य दुनिया अधूरी लगेगी, क्योंकि उनकी फिल्में और अदाकारी आने वाली पीढ़ियों को मनोरंजन और प्रेरणा का स्रोत बनकर रहेंगी।

असरानी के निधन के बाद फिल्म उद्योग और उनके प्रशंसकों में शोक की लहर दौड़ गई। सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफॉर्म पर उनके सहयोगियों, मित्रों और फैंस ने उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनकी याद में संदेश साझा किए। उनके योगदान को याद करते हुए कई कलाकारों ने कहा कि असरानी की हास्य शैली और फिल्मी करियर हमेशा यादगार रहेगा और उनकी कॉमिक टाइमिंग की मिसाल दी जाएगी।

उनका निधन केवल एक कलाकार के खोने का नहीं, बल्कि बॉलीवुड में हास्य की दुनिया में एक युग के खत्म होने का प्रतीक है। असरानी ने अपनी फिल्मों और अदाकारी के माध्यम से हंसी और खुशी का ऐसा खजाना छोड़ गया है, जो हमेशा दर्शकों के दिलों में जीवित रहेगा। उनकी कॉमेडी और सरल व्यक्तित्व ने उन्हें भारतीय सिनेमा में एक अमर स्थान दिलाया और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनाया।

फ्लिपकार्ट डिलीवरी एजेंट लूट कांड: वाराणसी पुलिस ने साजिश रचने वाले तीन बदमाशों को दबोचा, तमंचा और लूट का माल बरामद

(जीएनएस)। वाराणसी। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में एक सुनियोजित लूट कांड का पर्दाफाश करते हुए पुलिस ने सोमवार को तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया। ये वही लोग हैं जिन्होंने 18 अक्टूबर को बड़ागांव चिउरापुर–हथिवार मार्ग पर फ्लिपकार्ट डिलीवरी एजेंट महेश कुमार वर्मा से तमंचा दिखाकर मोबाइल, नगद और पार्सल छीन लिया था। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर लूट में इस्तेमाल हुई मोटरसाइकिल, एक देशी तमंचा .315 बोर और एक जिंदा कारतूस भी बरामद किया। इस गिरफ्तारी से वाराणसी पुलिस ने ऑनलाइन शॉपिंग और डिलीवरी के दौरान सुरक्षा की सख्त जरूरत पर जोर दिया। घटना

के अनुसार, आरोपियों ने पहले अपना नाम बदलकर फ्लिपकार्ट पर खाता बनाया और मोबाइल के ऑर्डर के लिए महेश कुमार को बुलाया। मोहित यादव, शनि यादव और अमन यादव ने पहले से योजना बनाई कि जब डिलीवरी एजेंट मोबाइल देने आएगा, तो उसे सूनसान जगह पर बुलाकर लूट लिया जाएगा। जैसे ही महेश कुमार वहां पहुंचे, पीछे बैठे अमन यादव ने तमंचा दिखाया और साथी बदमाशों के साथ मिलकर नया रेडमी 15 (5जी) मोबाइल, उनका निजी फोन, नगद और बुकिंग पार्सल जबरन छीन लिया। डीसीपी गोमती जोन कार्यालय के अनुसार, घटना की रिपोर्ट मिलने के बाद बड़ागांव पुलिस ने तुरंत जांच शुरू की। पुलिस टीम ने आरोपियों की लोकेशन का पता लगाकर उन्हें दबोच लिया। पूछताछ में मोहित यादव ने स्वीकार किया कि वे आपस में मित्र हैं और पहले भी लूटपाट की कई घटनाओं में शामिल रह चुके हैं। पुलिस ने बताया कि तीनों के खिलाफ विधिक कार्रवाई की जा रही है और मामले की आगे की जांच जारी है। इस गिरफ्तारी ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि योजनाबद्ध अपराध भी पुलिस की तत्परता, तकनीकी साधनों और लोकल इंटेलिजेंस के जरिए जल्दी उजागर किए जा सकते हैं। इसके अलावा यह घटना ऑनलाइन डिलीवरी एजेंटों और ग्राहकों के लिए सुरक्षा की चेतावनी भी है। पुलिस ने आम लोगों से अपील की कि वे किसी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी तुरंत स्थानीय थाने या हेल्पलाइन नंबर पर साझा करें, ताकि इस तरह की घटनाओं को समय रहते रोका जा सके। इस कांड ने यह भी उजागर किया कि बढ़ती डिजिटल शॉपिंग और पार्सल डिलीवरी के दौर में सुरक्षा उपायों को और मजबूत करना अनिवार्य है।

गुजरात पुलिस की बड़ी कार्रवाई: बर्खास्त उपनिरीक्षक रंजीत कासले डकैती मामले में महाराष्ट्र से गिरफ्तार

(जीएनएस)। सूरत। गुजरात पुलिस ने सोमवार को बर्खास्त उपनिरीक्षक रंजीत कासले को डकैती के मामले में महाराष्ट्र के लातूर से गिरफ्तार किया। अधिकारियों के अनुसार, कासले के खिलाफ सूरत के पास पाल पुलिस थाने में दर्ज डकैती मामले के सिलसिले में यह गिरफ्तारी की गई। गिरफ्तारी रविवार रात करीब 10:30 बजे हुई।

सूत्रों के मुताबिक, गिरफ्तारी के समय कासले ने नाटकीय अंदाज में कहा, "बॉस गिरफ्तार हो गया।" महाराष्ट्र सरकार ने कासले को कुछ महीने पहले बर्खास्त किया था। इसके पीछे आरोप था कि उन्होंने बीड सरपंच हत्याकांड के मुख्य संदिग्ध वाल्मीक कराड को मारने की सुपारी ली थी।

गुजरात पुलिस के अपराध शाखा के

निरीक्षक सुधाकर ने बताया कि मामले की गहन जांच के बाद टीम लातूर पहुंची और कासले को गिरफ्तार किया। पूछताछ में सूरत मामले में गिरफ्तार अन्य संदिग्धों ने कासले की कथित भूमिका की ओर भी इशारा किया।

कासले की गिरफ्तारी से यह स्पष्ट हुआ कि पुलिस विभाग में बर्खास्त कर्मचारियों की संदिग्ध गतिविधियों पर भी नजर रखी जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि गिरफ्तार कासले के खिलाफ सूरत पुलिस थाने में दर्ज मामले में अब कानूनी कार्रवाई आगे बढ़ाई जाएगी। इस मामले में जांच जारी है और पुलिस अन्य आरोपियों तक पहुँचने के प्रयास कर रही है।

यह गिरफ्तारी गुजरात पुलिस की तेजी और संगठित कार्रवाई का परिचायक है, जिसने यह संदेश दिया है कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह पूर्व पुलिसकर्मी ही क्यों न हो, कानून से ऊपर नहीं है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने रेलकर्मियों को दी दिवाली की शुभकामनाएं,और यात्री सेवा में उनके योगदान को सराहा

(जीएनएस)। दिवाली खुशियों का त्यौहार है। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा रेगुलर ट्रेन के अलावा स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है, जिससे कि आप अपने परिवार के साथ घर जाकर दिवाली मना सके।हमारे स्टेशन मास्टर, टिकट चेकर,बुकिंग स्टाफ, ट्रैकमैन, लोको पायलट, ट्रेन मेनेजर, रेल सुरक्षा बल के जवान, सफाई सेवक इत्यादि हर किसी का यह प्रयास है कि इस त्योहार के सीजन में आपकी यात्रा मंगलमय हो और आप अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी दिवाली एवं छठ मना सके।

वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके द्वारा आज वडोदरा स्टेशन पर ट्रैकमैन, सिग्नल मैन, सफाई सेवकों, रेल सहायक इत्यादि को दिवाली के इस पावन पर्व पर शुभकामनाएं दी गई और

उन्हें मिठाई का वितरण भी किया गया। श्री भडके ने रेल कर्मियों के इस फेस्टिवल सीजन में स्टेशन पर क्राउड मैनेजमेंट, साफ-सफाई जैसी विभिन्न व्यवस्थाओं के प्रबंधन में उनके योगदान के लिए धन्यवाद भी किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सभी नागरिकों और दुनिया भर में फैले गुजराती परिवारों को दीपावली और नूतन वर्ष की शुभकामनाएं दीं

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- विक्रम संवत 2082 का नया साल सभी के लिए विकास और समृद्ध का वर्ष हो
- 'हर घर स्वदेशी, घर घर स्वदेशी' और 'वोकल फॉर लोकल' के मंत्र से 'आत्मनिर्भर भारत' का संदेश घर-घर तक पहुंचाने को संकल्पबद्ध हों
- प्रधानमंत्री ने दिवाली के पर्व पर 'नेक्स्ट जेन जीएसटी रिफॉर्म्स' के जरिए खुशियों का डबल बोनस दिया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सभी नागरिक भाई-बहनों और दुनिया भर में फैले गुजराती परिवारों को दिवाली और विक्रम संवत 2082 के नूतन वर्ष की शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने शुभकामनाएं व्यक्त की कि विक्रम संवत के इस नव वर्ष में सभी लोग नए उत्साह और आनंद के साथ समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर हों।

मुख्यमंत्री ने दिवाली और नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए कहा, "दीपावली की दीपमाला अंधकार से उजाले की ओर जाने की प्रेरणा देती है। इस प्रेरणा के साथ गुजरात 'सबका साथ, सबका विकास' के सकारात्मक दृष्टिकोण से विकास की ओर ऊर्ध्व गति कर रहा है।" मुख्यमंत्री ने नागरिकों से अपील की है कि इन त्योहारों में सभी नागरिक स्थानीय व्यापारियों, कारीगरों और उद्योगकारों से खरीदारी करने के लिए संकल्पबद्ध हों तथा 'हर घर स्वदेशी, घर घर स्वदेशी' और 'वोकल फॉर लोकल' के माध्यम से 'आत्मनिर्भर भारत' का संदेश घर-घर तक पहुंचाएं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने दिवाली के पर्व पर 'नेक्स्ट जेन जीएसटी रिफॉर्म्स' के माध्यम से लोगों को खुशियों का डबल बोनस दिया है, इसके फलस्वरूप व्यवसाय करना और भी आसान हो गया है, विकास तेज गति से आगे बढ़ रहा है और गुजरात समृद्धि के नए शिखरों को छू रहा है।

मुख्यमंत्री ने अपने शुभकामना संदेश में कहा, "भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के लक्ष्य के अनुरूप 'विकसित गुजरात@2047' के विजन को साकार करने के लिए हमने 'एजेंडा फॉर 2035' के माध्यम से राज्य के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य निर्धारित किए हैं।"

मुख्यमंत्री ने यह अपेक्षा भी व्यक्त की है कि विक्रम संवत के इस नूतन वर्ष में प्रधानमंत्री के विकसित भारत के विजन को विकसित गुजरात के जरिए साकार करने के लिए सभी गुजराती संकल्पबद्ध होंगे।

उन्होंने कहा कि गुजरात ने भारत के ग्रोथ इंजन के रूप में अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। वर्ष 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन अहमदाबाद में होने जा रहा है, जो एक और गौरवशाली क्षण है। उन्होंने प्रकाश पर्व दीपावली के अवसर पर यह मंगलकामनाएं व्यक्त की कि राज्य की संस्कृति और विकास पूरे देश के लिए और अधिक प्रेरणादायी बने।

मुख्यमंत्री ने अपने इस दीपावली संदेश में यह हार्दिक शुभकामनाएं भी व्यक्त की हैं कि राज्य की अविरत विकास यात्रा को तेज गति से आगे बढ़ाने के दृढ़ संकल्प के साथ सभी लोग विक्रम संवत के नववर्ष में विकास के मार्ग पर और अधिक गतिमय हों।

21 और 22 अक्टूबर को कुछ पैसेंजर ट्रेनें निरस्त रहेगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा परिचालनिक कारणों से अहमदाबाद मंडल पर चलने वाली कुछ पैसेंजर ट्रेनों को निरस्त किया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार है:

21 और 22 अक्टूबर 2025 को निरस्त ट्रेनें

1.ट्रेन संख्या 69185/69186 अहमदाबाद-विरमगाम-अहमदाबाद मेमू

2.ट्रेन संख्या 59481/59482 महेसाणा-भीलड़ी-महेसाणा पैसेंजर

3.ट्रेन संख्या 59509/59510 महेसाणा-विरमगाम-महेसाणा पैसेंजर

4.ट्रेन संख्या 59511/59512 महेसाणा-विरमगाम-महेसाणा पैसेंजर

5.ट्रेन संख्या 59475/59476 महेसाणा-पाटन-महेसाणा पैसेंजर

6.ट्रेन संख्या 59483/59484 महेसाणा-पाटन-महेसाणा पैसेंजर

ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन कर सकते है।

दिल्ली-एनसीआर में दिवाली पर जहरीली हवा का कहर, वायु गुणवत्ता 'संगीन' स्तर पर पहुंची, GRAP 2 लागू

(जीएनएस)। दिल्ली-एनसीआर। दीपावली के त्योहार की रौनक के बीच राजधानी और उसके आसपास के इलाकों में वायु प्रदूषण ने एक बार फिर लोगों की चिंता बढ़ा दी है। रविवार देर रात से ही शहर में धुंध और धुएं का घना मिश्रण देखने को मिला, जिससे सोमवार सुबह तक कई इलाकों में हवा 'गंभीर' स्तर तक प्रदूषित हो गई। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार, आनंद विहार और वज़ीरपुर जैसे क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) 400 से अधिक दर्ज किया गया। कुल 38 मॉनिटरिंग स्टेशनों में से 27 स्टेशन 'बहुत खराब' श्रेणी में थे। वहीं, कुछ इलाकों जैसे श्री अरविंदो मार्ग में हवा की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर रही, जहां AQI लगभग 168 दर्ज हुआ। विशेषज्ञों के अनुसार, AQI का स्तर 401 और उससे ऊपर 'संगीन' माना जाता है और 301 से 400 के बीच 'बहुत खराब' श्रेणी में आता है।

वायु गुणवत्ता में अचानक हुए इस बदलाव के बाद राजधानी में ग्रैडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान (GRAP) का स्टेज-2 लागू कर दिया गया। इस चरण में डीज़ल जेनरेटर के इस्तेमाल पर सख्त पाबंदी, पार्किंग शुल्क में बढ़ोतरी और बाहरी राज्यों से आने वाली बसों में केवल CNG या इलेक्ट्रिक वाहनों की अनुमति जैसी सख्तियां शामिल हैं। इससे पहले 14 अक्टूबर को GRAP का

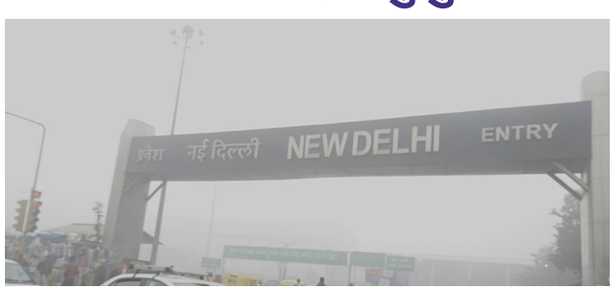

पहला चरण लागू किया गया था, लेकिन प्रदूषण के लगातार बढ़ते स्तर ने प्रशासन को अधिक कड़े कदम उठाने के लिए बाध्य कर दिया।

इस साल सुप्रीम कोर्ट द्वारा जारी आदेश के तहत राजधानी में ग्रीन क्रैकर्स को सीमित समय में फोड़ने की अनुमति दी गई है। नियमों के अनुसार दिवाली से एक दिन पहले और मुख्य त्योहार वाले दिन सुबह 6 से 7 बजे और रात 8 से 10 बजे तक ही पटाखों का उपयोग किया जा सकता है। हालांकि, पर्यावरण विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि हवा पहले से ही बेहद खराब होने के कारण नागरिकों को अतिरिक्त सावधानी बरतनी होगी। मौसम विभाग के अनुसार, सोमवार को दिल्ली-एनसीआर में अधिकतम तापमान 33.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ, जो सामान्य से लगभग एक डिग्री अधिक है। रात का न्यूनतम तापमान भी औसत से ऊपर रहा। मौसम विशेषज्ञों का अनुमान है कि दिन के दौरान हल्की धुंध बनी रहेगी और तापमान लगभग 33 डिग्री के आसपास रहेगा, जबकि रात का तापमान 21 डिग्री तक पहुंच सकता है। वायु प्रदूषण के बढ़ते स्तर के कारण राजधानी में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी बढ़ गई हैं। लोगों ने आंखों में जलन, सांस लेने में कठिनाई और एलर्जी जैसी शिकायतें दर्ज कराई हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि बच्चे, बुजुर्ग और पहले से बीमार लोग ज्यादा संवेदनशील हैं और उन्हें सुबह-शाम घर से बाहर निकलने से बचना चाहिए। प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि वे निजी वाहनों का उपयोग कम करें, पटाखों के निर्धारित समय का पालन करें और धूल और धुएं फैलाने वाले कार्यों में हिस्सा न लें। वहीं, बीते कुछ वर्षों की तरह इस बार भी दिवाली की रौनक वायु प्रदूषण और स्वास्थ्य जोखिमों के साए में छाई रही है।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने त्योहारी सीजन में रेलवे तैयारियों का लिया जायजा, यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा को बताया सर्वोच्च प्राथमिकता

(जीएनएस)। नई दिल्ली। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोमवार को रेलवे बोर्ड स्थित वॉर रूम का दौरा किया और दिवाली सहित त्योहारी सीजन के दौरान रेलवे की तैयारियों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाया और उन्हें त्योहारी शुभकामनाएं दीं। रेल मंत्रालय की ओर से जारी जानकारी के अनुसार, वैष्णव ने यह सुनिश्चित किया कि भारी भीड़ और यात्री आवाजाही के दौरान सुरक्षा और सुविधा की कोई कमी न हो।

सुरक्षा और सुविधा का जायजा

त्योहारी सीजन के मद्देनजर केंद्रीय मंत्री ने रविवार को आनंद विहार रेलवे स्टेशन का औचक निरीक्षण भी किया। स्टेशन के होल्डिंग एरिया और प्लेटफॉर्म पर मौजूद यात्रियों से सीधे बातचीत करते हुए उन्होंने उनकी सुविधा और सफाई के बारे में फीडबैक लिया। वैष्णव ने कहा कि रेलवे ने व्यापक व्यवस्थाओं के माध्यम से यह सुनिश्चित किया है कि त्योहारी भीड़ के बावजूद यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने यह भी कहा कि सोशल मीडिया पर

रेलवे से संबंधित फर्जी वीडियो फैलाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा रही है और जनता से ऐसे वीडियो साझा न करने की अपील की।

केंद्रीय रेल मंत्री ने यह भी बताया कि त्योहारी सीजन के दौरान 12 लाख रेलवे कर्मचारी दिन-रात यात्रियों की सुविधा और अधिक से अधिक ट्रेनों के संचालन में जुटे हैं। इसके अलावा, उन्होंने गुरुवार को राजस्थान के जयपुर में 65 छोटे और मध्यम रेलवे स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म उन्नयन, नए प्लेटफॉर्म और एकीकृत यात्री सूचना प्रणाली का उद्घाटन किया।

नए कंबल कवर से यात्रियों को सुविधा

इस मौके पर जयपुर-असरवा एक्सप्रेस की सभी एसी श्रेणी की ट्रेनों में यात्रियों के लिए मुद्रित कंबल कवर की व्यवस्था भी शुरू की गई। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि यह नई पहल यात्रियों के अनुभव में सुधार लाने के उद्देश्य से शुरू की गई है। उन्होंने कहा, "रेलवे प्रणाली में हमेशा से कंबल का उपयोग होता रहा है, लेकिन इसे लेकर संशय और असुविधाएं रहती थीं। जयपुर स्टेशन से पायलट परियोजना के रूप में इस ट्रेन में कंबल कवर की व्यवस्था की गई है, जिससे यात्रियों को सफर के दौरान बेहतर सुविधा मिल सके।"

वैष्णव ने यह भी आश्वासन दिया कि दिवाली और छठ जैसे प्रमुख त्योहारों के दौरान रेलवे की तैयारियां यात्रियों की सुगम और सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए लगातार जारी रहेंगी। यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा और बेहतर अनुभव को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का यह प्रयास रेल मंत्रालय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दिल्ली पुलिस और अग्निशमन विभाग ने त्योहारों पर बढ़ाई सुरक्षा, ड्रोन और क्यूआरटी से रखी पैनी नजर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। दिवाली और अन्य त्योहारों के पावन अवसर पर दिल्ली में सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने के लिए दिल्ली पुलिस और अग्निशमन विभाग ने हाईटेक और व्यापक तैयारियों की शुरुआत की है। इस साल पुलिस ने 'नेत्र, नेतृत्व, नारी' अभियान के तहत ड्रोन संचालन में प्रशिक्षित महिला अधिकारियों को तैनात किया है, जिन्हें 'ड्रोन दीदी' के नाम से जाना जाता है। ये महिला अधिकारी तिलक नगर, राजौरी गार्डन, मोती नगर और कीर्ति नगर जैसे भीड़भाड़ वाले बाज़ारों में वास्तविक समय में हवाई निगरानी कर रही हैं।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि ड्रोन के माध्यम से ये अधिकारी संदिग्ध गतिविधियों और भीड़ की गतिविधियों पर नजर रखती हैं। असामान्य गतिविधियों का कोई भी फुटेज तुरंत जिला नियंत्रण कक्ष को भेजा जाता है, जिससे तुरंत कार्रवाई संभव हो सके। इसके अलावा, ये महिला अधिकारी यातायात नियंत्रण में भी सहायता प्रदान करती हैं और किसी भी अप्रत्याशित स्थिति में मददगार साबित होती हैं।

त्योहारों के दौरान आग लगने की संभावनाओं को देखते हुए दिल्ली अग्निशमन सेवा (डीएफएस) ने अपने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी हैं। डीएफएस ने चौबीस घंटे तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिए विस्तृत

योजना बनाई है। वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि हर अग्निशमन केंद्र और त्वरित प्रतिक्रिया टीम (क्यूआरटी) को अत्यधिक सतर्क रहने और किसी भी आपातकालीन कॉल पर तत्काल कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। पिछली दिवाली के अनुभव से सबक लेते हुए, इस साल 100 से अधिक स्थानों पर कई क्यूआरटी तैनात की गई हैं। अधिकारियों ने कहा कि पिछले साल डीएफएस को आग से संबंधित 200 से अधिक आपातकालीन कॉल मिली थीं, जिनमें अधिकांश पटाखों, शॉर्ट सर्किट और दीयों व मोमबत्तियों के कारण हुई आग से संबंधित थीं। सदर बाजार, चांदनी चौक, भागीरथ पैलेस और औद्योगिक क्षेत्रों जैसे आग लगने की आशंका वाले इलाकों में अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती की गई है। डीएफएस अधिकारियों ने कहा कि हर वाहन और उपकरण पूरी तरह से जांचे और चालू हालत में हैं ताकि किसी भी संभावित स्थिति में तेजी और प्रभावी ढंग से कार्रवाई की जा सके। इस व्यापक व्यवस्था के तहत दिल्ली पुलिस और अग्निशमन विभाग का लक्ष्य है कि त्योहारों के दौरान राजधानी में नागरिक सुरक्षित रहें और किसी भी अप्रिय घटना को रोका जा सके। हाईटेक निगरानी और तत्पर प्रतिक्रिया के जरिए सुरक्षा व्यवस्था में एक नया आयाम जुड़ा है, जिससे त्योहारों की खुशी के बीच लोग सुरक्षित माहौल में आनंद मना सकें।

ओडिशा में मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने अंत्योदय गृह योजना के तहत 48,693 लाभार्थियों को पहली किस्त वितरित की, गरीबों को मिलेगा पक्का मकान

(जीएनएस)। भुवनेश्वर। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने रविवार को अंत्योदय गृह योजना (एजीवाई) के तहत राज्य के 48,693 लाभार्थियों को 40,000 रुपये की पहली किस्त वितरित की। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि उनकी सरकार गरीबों को पक्के मकान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है और इसी उद्देश्य से 30 मार्च को एजीवाई की शुरुआत की गई थी। पहली किस्त के रूप में कुल 194.77 करोड़ रुपये लाभार्थियों के बैंक खातों में भेजे गए। मुख्यमंत्री ने बताया कि इस योजना के लिए 2024-25 से 2027-28 की अवधि में कुल 7,550 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है, जिसका लक्ष्य पांच लाख घरों का निर्माण करना है। उन्होंने आगे बताया कि प्रत्येक लाभार्थी को तीन किस्तों में कुल 1.20 लाख रुपये वितरित किए जाएंगे। पहली किस्त के रूप में 40,000 रुपये दिए गए हैं, दूसरी किस्त में 65,000 रुपये और तीसरी किस्त में 15,000 रुपये प्रदान किए जाएंगे।

प्रोत्साहन राशि से बढ़ेगी मकान निर्माण की गति

माझी ने यह भी कहा कि जो लाभार्थी चार महीने के भीतर अपना मकान पूरा करेंगे, उन्हें अतिरिक्त 20,000 रुपये प्रोत्साहन राशि के रूप में दिए जाएंगे, जबकि छह महीने के भीतर मकान पूरा करने पर 10,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि मिलेगी। इसका उद्देश्य लाभार्थियों को मकान निर्माण की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए प्रेरित करना है।

नए ग्राम पंचायत कार्यालयों का निर्माण

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने राज्य के 30 में से 28 जिलों की 471 ग्राम पंचायतों में नए कार्यालयों के निर्माण की आधारशिला भी रखी। माझी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार ग्राम पंचायतों को जन कल्याण और सेवा के केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए कार्यरत है। प्रत्येक ग्राम पंचायत कार्यालय के निर्माण पर केंद्र और राज्य सरकार संयुक्त रूप से 35 लाख रुपये खर्च करेंगे।

मुख्यमंत्री ने लाभार्थियों और आम जनता को आश्वस्त किया कि अंत्योदय गृह योजना के माध्यम से गरीबों को उनके अपने घर के स्वप्न को पूरा करने का अवसर मिलेगा और यह कदम राज्य में सामाजिक न्याय और समृद्धि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण साबित होगा। इस योजना के तहत मकान निर्माण के साथ ही ग्रामीण प्रशासनिक ढांचे को मजबूत करने और ग्राम पंचायतों को सक्षम बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण काम हो रहा है।

चांदी की कीमतों में तेज गिरावट, चेन्नई-हैदराबाद में 17 हजार रुपये प्रति किलोग्राम तक कमी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पिछले कुछ हफ्तों में लगातार बढ़त के बाद अब चांदी की कीमत में तेज गिरावट देखने को मिल रही है। घरेलू सर्राफा बाजार में पिछले एक सप्ताह के दौरान चांदी के भाव में औसतन 8,000 रुपये प्रति किलोग्राम की कमी दर्ज की गई है, जबकि चेन्नई और हैदराबाद जैसे प्रमुख बाजारों में यह गिरावट 17,000 रुपये तक पहुंच गई है। 15 अक्टूबर को जहां चेन्नई और हैदराबाद में चांदी का भाव 2,07,000 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया था, वहीं अब यह घटकर लगभग 1,90,000 रुपये के स्तर पर आ गया है।

दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, कोलकाता, जयपुर, सूरत और पुणे में चांदी का भाव 1,71,900 रुपये प्रति किलोग्राम पर कारोबार कर रहा है। बेंगलुरु में चांदी 1,79,900 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव पर पहुंच गई है, जबकि चेन्नई और हैदराबाद में 1,89,900 रुपये प्रति किलोग्राम पर कारोबार हो रहा है। इस गिरावट ने निवेशकों और व्यापारियों के लिए चिंता बढ़ा दी है। बुलियन मार्केट विशेषज्ञ मयंक मोहन का कहना है कि वैश्विक बाजार में उतार-चढ़ाव, लंदन के इंटरनेशनल सिल्वर मार्केट में सप्लाई की कमी और इंडस्ट्रियल डिमांड में वृद्धि ने पिछले कुछ हफ्तों में चांदी की कीमत को बढ़ावा दिया था। त्योहारी सीजन में घरेलू मांग में तेजी और सोने की तुलना में चांदी में निवेश की प्रवृत्ति ने भी कीमतों को ऊंचा बनाए रखा। इस दौरान चांदी के सिक्कों की बिक्री में सालाना आधार पर लगभग 40 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई थी। हालांकि, पिछले सप्ताह मुनाफा वसूली और अंतरराष्ट्रीय बाजार में सप्लाई की सामान्य स्थिति के कारण चांदी की कीमत में करीब 6 प्रतिशत की गिरावट देखी गई, जो पिछले छह महीनों में सबसे बड़ी साप्ताहिक गिरावट मानी जा रही है। टीवीएन फाइनेंशियल सर्विसेज के सीईओ तारकेश्वर नाथ वैष्णव के अनुसार, लंदन मार्केट में सप्लाई की अस्थिर स्थिति और अचानक हुए बदलाव ने भारतीय सर्राफा बाजार को भी प्रभावित किया। विशेषज्ञों का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार की स्थिति और घरेलू मांग दोनों ही अगले कुछ दिनों में चांदी के भाव को निर्णायक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। निवेशकों के लिए यह समय सतर्क रहने और बाजार की स्थिति को ध्यान से देखने का है, क्योंकि सप्लाई और मांग में मामूली बदलाव भी चांदी की कीमतों में तेज उतार-चढ़ाव ला सकते हैं। इस सप्ताह की गिरावट ने न केवल निवेशकों बल्कि दुकानदारों और व्यापारियों को भी अलर्ट कर दिया है, जिससे बाजार में अस्थिरता की संभावना बनी हुई है।

यूपी के जालौन में शराब के दौरान पुलिस और युवकों में मारपीट, पांच लोग गंभीर रूप से घायल

(जीएनएस)। जालौन। उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के नदीगांव क्षेत्र में रविवार रात को एक गंभीर घटना सामने आई, जिसमें पुलिस का एक जवान और कुछ युवक आपस में शराब पीने के दौरान हुए विवाद में जमकर भिड़ गए। इस झगड़े में पुलिस के सिपाही सहित कुल पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को इलाज के लिए तुरंत क्षेत्रीय सीएचसी में भर्ती कराया गया।

घटना के मुताबिक, नदीगांव थाने के कुछ ही दूरी पर नदी के किनारे बने यात्री प्रतीक्षालय में कुछ लोग बैठकर शराब पी रहे थे। इनमें नदीगांव थाने का एक सिपाही भी शामिल था। शराब के नशे में वहां आपस में कहासुनी शुरू हुई, जो जल्द ही हाथापाई में बदल गई। झगड़े के दौरान दोनों पक्षों के पास लाइसेंसी बंदूकें और कारतूस भी थे, जिससे क्षेत्र में भय और दहशत फैल गई।

स्थानीय लोगों ने मामले की जानकारी थाने को दी, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची। इस दौरान कुछ आरोपी वहां से भाग गए, जबकि पुलिस ने हाकिम सिंह निवासी नदीगांव और राजवीर सिंह निवासी खजुरी, मध्यप्रदेश को गिरफ्तार कर लिया। झगड़े में घायल हुए अन्य तीन लोग—रिंकू, गंधर्व सिंह, अक्षय सोनी और

जीतू—सीएचसी में उपचाराधीन हैं। घायलों में पुलिस का सिपाही विकास चौधरी भी शामिल है, जिन्हें विशेष ध्यान में रखा गया है।

पुलिस अधीक्षक (सीओ) परमेश्वर प्रसाद ने बताया कि घटना के संबंध में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और घटना की पूरी जांच की जा रही है। विशेष जांच इस बात पर भी केन्द्रित है कि थाने का सिपाही शराब पीने के लिए वहां कैसे पहुँचा और उसने झगड़े में भाग क्यों लिया। थानाध्यक्ष शशिकांत चौहान ने कहा कि दो आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि पांच अन्य आरोपी अभी फरार हैं। मौके से दो लाइसेंसी बंदूकें और 20 जिंदा कारतूस बरामद किए गए हैं, जिन्हें सबूत के तौर पर कब्जे में लिया गया है। नदीगांव थाने का यह क्षेत्र सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील माना जाता है, क्योंकि यह मध्यप्रदेश से लगे बॉर्डर के पास स्थित है और यहां से होकर व्यापारी और अन्य लोग बार-बार आते-जाते हैं। इस घटना ने स्थानीय लोगों में पुलिस की छवि और सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। प्रशासन ने चेतावनी दी है कि जिन लोगों ने हिंसा और अवैध हथियारों के साथ मारपीट की, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

जोधपुर की भड़सिया फल मंडी में भीषण आग, दमकल की टीमें जूझ रही हैं

(जीएनएस)। जोधपुर। राजस्थान के जोधपुर में भड़सिया फल मंडी में सोमवार दोपहर अचानक भीषण आग लग गई, जिससे मंडी में रखा बड़ा हिस्सा जलकर राख हो गया। आग की तीव्रता और तेज धुएं के कारण आसपास के इलाके में रहने वाले लोगों में दहशत फैल गई। स्थानीय दमकल विभाग और पुलिस मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाने का प्रयास कर रही है।

सूत्रों के अनुसार, आग मंडी के गोदामों में रखे फल और अन्य सामग्री में लगी, जिससे आग तेजी से फैल गई। कई कर्मचारियों और दुकानदारों ने अपनी जान बचाने के लिए मंडी से बाहर निकलना पड़ा। मौके पर दमकल की करीब दस गाड़ियों को लगाया गया है और आग बुझाने के लिए पानी की सप्लाई भी बढ़ाई गई है। अधिकारियों ने बताया कि आग की सही वजह का अभी पता नहीं चल सका

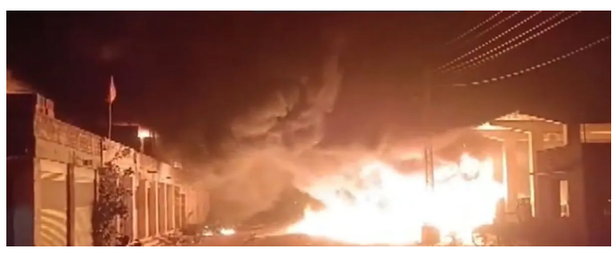

है, लेकिन प्रारंभिक जांच में शॉर्ट सर्किट या किसी उपकरण में तकनीकी खराबी को संभावित कारण माना जा रहा है। आग के कारण मंडी के कई गोदाम पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए हैं और कुछ दुकानों में रखी सामग्री जलकर नष्ट हो गई है।

स्थानीय प्रशासन ने लोगों से आग के प्रभावित इलाके से दूरी बनाए रखने की अपील की है। दमकल अधिकारी आग पर काबू पाने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं और प्राथमिक तौर पर किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। आग बुझाने के लिए और सहायता टीमों को भी मौके पर बुलाया गया है।

यह आग का मामला न केवल मंडी संचालकों के लिए आर्थिक नुकसान का कारण बना है, बल्कि जोधपुर के व्यापारिक और सप्लाई नेटवर्क को भी प्रभावित कर सकता है। प्रशासन ने कहा है कि आग लगने की वजह का विस्तृत विवरण और नुकसान का आकलन जल्द ही जारी किया जाएगा।

जेडीयू ने तेजस्वी की घोषणा को एकतरफा करार देते हुए कहा, बिहार चुनाव में राजद ने पहले ही हार मान ली

(जीएनएस)। पटना। बिहार विधानसभा चुनाव से पहले राष्ट्रीय जनता दल (राजद) द्वारा 143 उम्मीदवारों की सूची जारी करने के बाद जनता दल (यूनाइटेड) ने इसे एकतरफा घोषणा करार दिया और कहा कि इससे साफ संकेत मिलता है कि नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने चुनाव से पहले ही हार स्वीकार कर ली है। जद(यू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने सोमवार को मीडिया से बातचीत में इस बात को दोहराया कि यादव के अहंकार और शेखी बघारने वाले दावे उनके ही सहयोगियों द्वारा कमजोर किए जा चुके हैं।

प्रसाद ने कहा कि महागठबंधन के भीतर जिस तरह की एकजुटता और तालमेल की आवश्यकता थी, वह गायब दिख रही है। उनका कहना था कि तेजस्वी यादव के पास सिर्फ लंबे-चौड़े भाषण देने के अलावा कुछ नहीं बचा है। उन्होंने आगे कहा कि

नीतीश कुमार के नेतृत्व में राज्य में लाए गए बदलाव और विकास ने विपक्षी गठबंधन की कमजोरियों को और उजागर कर दिया है। "गठबंधन में बिखराव साफ दिख रहा है। राजद और कांग्रेस के बीच उम्मीदवारों की टकराव वाली स्थिति इसका प्रमाण है। ऐसे हालात में हमारा विश्वास है कि हमारी जीत लगभग तय है," प्रसाद ने कहा।

राजद ने 6 और 11 नवंबर को होने वाले दो चरणों के बिहार विधानसभा चुनाव के लिए 143 उम्मीदवारों की सूची जारी की है, जिसमें 24 महिला उम्मीदवार भी शामिल हैं। इसके साथ ही महागठबंधन का स्वरूप भी लगभग स्पष्ट हो गया है। राजद 143 सीटों पर, कांग्रेस 61, भाकपा माले 20 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, जबकि शेष सीटें वीआईपी और छोटे सहयोगियों को दी जा सकती हैं। हालांकि गठबंधन की औपचारिक घोषणा अभी बाकी है, इसलिए अंतिम समय में कुछ बदलाव संभव हैं।

सूची में प्रमुख उम्मीदवारों में तेजस्वी यादव राघोपुर से, ललित यादव दरभंगा ग्रामीण से, दिलीप सिंह बरौली से, रामविलास पासवान पीरपैंती (एससी) से और सावित्री देवी चकाई से चुनाव लड़ेंगे। गौरतलब है कि कुछ सीटों पर राजद और कांग्रेस ने अपने-अपने उम्मीदवार उतारे हैं, जबकि महागठबंधन होने के बावजूद उनका सीधा मुकाबला होना तय है। उदाहरण के लिए, नरकटियागंज में दीपक यादव (राजद) और शाश्वत केदार पांडे (कांग्रेस) के बीच मुकाबला होगा; कहलगांव में रजनीश भारती (राजद) बनाम प्रवीण सिंह कुशवाहा (कांग्रेस); सिकंदरा (एससी) में उदय नारायण चौधरी (राजद) बनाम विनोद चौधरी (कांग्रेस) और लालगंज (वैशाली) में राजद की शिवानी शुक्ला का सामना कांग्रेस के आदित्य कुमार राजा से होगा।

जद(यू) के अनुसार यह घटनाक्रम स्पष्ट रूप से बताता है कि विपक्षी गठबंधन चुनाव में अपनी एकजुटता बनाए रखने में विफल रहा है, और इससे जनता के बीच उनके विजन और नेतृत्व की विश्वसनीयता पर सवाल उठ रहे हैं। तेजस्वी यादव के सहयोगियों और महागठबंधन के भीतर उभरे मतभेद चुनावी रणनीति और उम्मीदवारों की घोषणा में भी दिखाई दे रहे हैं, जो विपक्ष के लिए चुनौतीपूर्ण संकेत के रूप में देखे जा रहे हैं।